Volume – 2 | Issue – III | May-June 2025 | ISSN: 3049-0278 (Online)

Amitrakshar International Journal
of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
(A Social Science, Science and Indian Knowledge Systems Perspective)
Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Bi-Monthly, International E-Journal

पश्चिम बंगाल में तबले के विकास में पंडित ज्ञानप्रकाश घोष का योगदान

Uday Shankar Das[1]
Dr. Shivendra Pratap Tripathi[2]

सारांश (Abstract)

इस शोध पत्र में पंडित ज्ञानप्रकाश घोष के जीवन, उनके बहुआयामी योगदान, और विशेषकर पश्चिम बंगाल में तबले के विकास में उनके गूढ़ प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। 8 मई 1910 को कोलकाता में जन्मे पंडित ज्ञानप्रकाश घोष न केवल तबला वादन के प्रख्यात विद्वान थे, बल्कि उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को बहुआयामी रूप में समृद्ध किया।

बचपन से ही तबले के प्रति उनका गहरा आकर्षण था, जिसके कारण वे टनिबाबू (शुरेन्द्रनाथ दास), मसित खाँ, फिरोज़ खाँ जैसे उस्तादों के शरणागत हो गए। हालांकि उनका तबला वादन फ़र्रुखाबाद घराने की छाप लिए हुए था, फिर भी उन्होंने 'गाब', 'कानी' एवं बाँया का संतुलन पूर्ण सामंजस्य पैदा करते हुए एक विशिष्ट वादनशैली का निर्माण किया।

वे सिर्फ तबले ही नहीं, बल्कि पखावज, श्रीखोल, हारमोनियम, बेहाला और गिटार वादन में भी सिद्धहस्त थे। इसके अतिरिक्त, उन्होंने रामपुर एवं लखनऊ घराने के उस्तादों से कंठ संगीत की शिक्षा ग्रहण करके गायन में भी निपुणता हासिल की।

आकाशवाणी कोलकाता में संगीत निर्देशक के रूप में उन्होंने योगदान दिया, विदेश में भारतीय सांस्कृतिक प्रतिनिधि के रूप में भ्रमण किया, फ़िल्म संगीत निर्देशन में सक्रिय रहे, 'सौरभ एकेडमी ऑफ़ म्यूज़िक' की स्थापना की, तथा 'तहजीब-ए-मौसिकी' नामक रचना लिखी। इन सभी कारणों से वे एक सम्पूर्ण संगीताचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

उनके प्रमुख शिष्य थे–अजय चक्रवर्ती, अरुण भदुरी, शंकर घोष तथा उनके पुत्र मल्लार घोष, जिन्होंने तबला परंपरा को आगे बढ़ाया। पद्मभूषण, देशिकोत्तम, संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप आदि अनेक सम्मानों से विभूषित पंडित ज्ञानप्रकाश घोष का जीवन स्वयं एक सतत् संगीत साधना का प्रतीक है।

यह शोध पत्र सिद्ध करता है कि पंडित घोष का योगदान केवल तकनीकी या प्रदर्शन तक सीमित नहीं था–वे एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत थे, जिनका प्रभाव आज भी गहन रूप से महसूस किया जाता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की विविधता एवं समृद्ध परंपरा में ताल एक अति महत्वपूर्ण घटक है। इस ताल का मुख्य वाहक तबला होता है। पश्चिम बंगाल जैसे सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध राज्य में तबला केवल एक वाद्ययंत्र नहीं, बल्कि

AIJITR - Volume - 2, Issue - III, May-Jun 2025

Copyright © 2025 by author (s) and (AIJITR). This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

[1] *(Research Scholar, DEI) Dayalbagh Educational Institute, Agra, UP, Email ID udasbaul11@gmail.com.*
[2] *(Supervisor), Assistant Professor (Selection Grade), Email ID: shivendra.tripathi@hotmail.com*

DOI Link (Crossref) Prefix: https://doi.org/10.63431/AIJITR/2.III.2025.77-83

AIJITR, Volume 2, Issue –III, May- June, 2025, PP. 77-83
Received on 26th May 2025 & Accepted on 24rd June, 2025, Published: 30th June, 2025.

Amitrakshar International Journal
of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
(A Social Science, Science and Indian Knowledge Systems Perspective)
Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Bi-Monthly, International E-Journal

साधना का एक माध्यम है। इस शोध पत्र का उद्देश्य पंडित ज्ञानप्रकाश घोष के जीवन एवं कार्यों का विश्लेषण करना है, और विशेषकर पश्चिम बंगाल में तबले के विकास में उनके योगदान की विस्तारपूर्वक चर्चा करना है।

कीवर्ड - *पश्चिम बंगाल, तबला, विकास, पंडित ज्ञान प्रकाश घोष, योगदान।*

भूमिका :

भारतीय संगीत के इतिहास में ज्ञानप्रकाश घोष एक अविस्मरणीय नाम हैं। अदभुत प्रतिभा के धनी ज्ञानप्रकाश ने कठोर साधना और अध्यवसाय से संगीत की सभी शाखाओं को निरूपित किया। गायन एवं यंत्रसंगीत में उन्होंने जो अपार वैभव रचा, वह अनवर्णनीय है।

जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि-

विश्वकवि रबीन्द्रनाथ ठाकुर के जन्म के पचपन वर्ष बाद, बंगाब्द 1316 के 25 बैशाख (अंग्रेजी तिथि: 8 मई 1910) को बंगाल के प्रमुख संगीताचार्यों में से एक, पंडित ज्ञानप्रकाश घोष का जन्म कोलकाता में हुआ। उनके पिता का नाम किरणचंद्र घोष था और दादा का नाम द्वारकानाथ घोष। द्वारकानाथ 'डोवारीं' कंपनी के संस्थापक थे। इस विशिष्ट परिवार के संगीत-संस्कृति माहौल में ज्ञानप्रकाश का बचपन बीता। उनके पिता एक विदग्ध संगीत-रसिक थे, दादा एक निपुण बेहाला वादक, और उनके चाचा शरत घोष एक उच्च स्तर के पियानोवादक थे।

प्रारंभिक शिक्षा

घर के वातावरण ने ज्ञानप्रकाश के भीतर संगीत के प्रति सहज आकर्षण को जन्म दिया। फिर भी प्रारंभ में संगीत का मोह उनकी औपचारिक शिक्षा से उन्हें विचलित नहीं कर पाया। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रेसिडेंसी कॉलेज से स्नातक परीक्षा में पाली भाषा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होकर 'जुबिली स्कॉलर' का खिताब प्राप्त किया। दृष्टि दोष के कारण उन्हें स्नातकोत्तर पूरा नहीं करने का अवसर मिला, परंतु संस्कृत, उर्दू और हिंदी में भी उनकी पकड़ थी। छात्र जीवन में शिक्षा के साथ-साथ चित्रकला और क्रिकेट में भी वे पारंगत हुए। उस समय चित्रकार बनने की गुप्त चाह उनके मन में पनपने लगी।

तबला शिक्षा

सात वर्ष की अवस्था में ही प्रसिद्ध तबला वादक टनिबाबू (शुरेन्द्रनाथ दास) के शिष्क के रूप में उनका तबला वादन आरंभ हुआ। तत्पश्चात् उन्हें आज़ीम खाँ, मसित खाँ, थेरेकुआ साहेब, अमीर हुसैन, केरामतुल्ला खाँ तथा फिरोज़ खाँ जैसे उस्तादों से शिक्षा मिली। विशेष रूप से मसित खाँ ने उनकी अद्वितीय प्रतिभा को पहचानकर उन्हें व्यापक रूप से ज्ञान प्रदान किया।

श्रीखोल एवं पखावज शिक्षा

जिनमें निरंतर ज्ञान की कामना होती है, केवल तबला वादन से संतुष्टि नहीं मिलती। अतः एक समग्र कलाकार बनने के लिए उन्होंने श्रीखोल एवं पखावज की विद्या भी ग्रहण की। उन्होंने पंडित नवद्वीप ब्रजवासी से प्रशिक्षित होकर अखण्ड वाद्य-शास्त्र (श्रीखोल) सीखा, और पखावज की शिक्षा विपिन घोष से ग्रहण की।

कंठसंगीत एवं अन्य वाद्ययंत्रों का प्रशिक्षण

गायन एवं विविध वाद्ययंत्रों की शिक्षा ग्रहण करके उनका संगीत जीवन का द्वितीय पर्व आरंभ हुआ। संगीत की एक शाखा–विशेषकर छंद एवं ताल में दक्षता प्राप्त हो जाने पर अन्य शाखाओं में सफलता अपेक्षाकृत सरलता से मिलती है। अतः ज्ञानप्रकाश ने शीघ्र ही इस क्षेत्र में अपनी क्षमता का परिचय दिया। उनके संगीत गुरु थे–रामपुर के विख्यात उस्ताद मेहदीहोसैं खाँ। इसके अतिरिक्त दबीर खाँ, सगीर खाँ, शबुन खाँ, गिरिजाशंकर चक्रवर्ती से भी उन्होंने कंठसंगीत की शिक्षा प्राप्त की। उस्ताद खुश मियाँ से उन्होंने हारमोनियम वादन की तालीम ली। उसके उपरांत गिटार एवं बेहाला का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

बहुमुखी प्रतिभा

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न यह कलाकार सृजनात्मक कार्यों से भी जुड़े रहे। रिकॉर्ड संगीत के युग में गिटार का प्रयोग करने की योजना सबसे पहले उन्होंने ही आरंभ की।

'द डांस ऑफ इंडिया' में हारमोनियम एवं बेहाला द्वारा पंडित वीज़ी योग के साथ युगलबंदी ने उन्हें अत्यधिक लोकप्रियता दिलाई।

उन्होंने सचिनदेव बर्मन, उमा बसु आदि अनेक विख्यात कलाकारों के साथ गिटार सहयोग करके अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया।

पंडित ज्ञानप्रकाश घोष के प्रमुख योगदान (कोलकाता में)

1. संगीतिक अनुसंधान एवं संरक्षण में अग्रणी भूमिका:

पंडित घोष लंबे समय तक ऑल इंडिया रेडियो (AIR), कोलकाता से जुड़े रहे। उन्होंने दुर्लभ तबला बंदिशों और रचनाओं को संरक्षित एवं प्रचारित करने की व्यवस्था की। कई पुराने घरानों की तबला, पखावज और तानपुरा की रिकॉर्डिंग उन्होंने संकलित कर आगामी पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखी।

2. संगीतिक समूह एवं सेमिनार आयोजन:

वे कोलकाता में तबले सम्बन्धी विभिन्न कार्यशालाएँ एवं सेमिनार आयोजित करते थे, जिसमें विभिन्न घरानों के तबला वादक भाग लेते थे। वे नवयुवकों को विभिन्न घरानों की विविधताल से परिचित करवाने के लिए प्रेरित करते थे।

3. तबला शिक्षण में गुरुकुल पद्धति का प्रचार:

उन्होंने अपने निवासस्थान पर एक तरह से 'गुरुकुल' जैसा वातावरण बनाया, जहाँ शिष्य तारतम्यपूर्वक उनके संपर्क में रहकर गहन रूप से तबला शिक्षा ग्रहण करते थे। इस प्रकार उन्होंने तबला शिक्षा को और भी सुदृढ़ एवं परम्परागत बनाया।

4. तबला साहित्य लेखन एवं पाठ्यक्रम निर्माण:

उन्होंने तबले से सम्बद्ध अनेक पाठ्यपुस्तकें एवं निर्देशिका लिखीं, और शैक्षणिक स्तर पर तबला शिक्षा को स्थापित करने में मदद की। कोलकाता के विभिन्न संगीत विद्यालयों में उनकी सिफ़ारिश से तबला पाठ्यक्रम और भी समृद्ध एवं सुव्यवस्थित हुआ।

5. नवोदित प्रतिभाओं को मंच उपलब्ध कराना:

उन्होंने 'संगीत अनुसंधान अकादमी' के माध्यम से नए कलाकारों को मंच प्रदान करने की व्यवस्था की। आज के कई प्रसिद्ध तबला वादक पहली बार उनके प्रयास से मंच पर आए थे।

6. सिनेमा एवं नाटक में तबले का उपयोग:

उन्होंने बंगाली एवं हिंदी फिल्मों में तबले का संवेदनशील उपयोग कर इसे मुख्यधारा की संस्कृति का हिस्सा बनाया। स्वयं उन्होंने कई फिल्मों का संगीत निर्देशन किया, जिनमें तबले को विशेष महत्व मिला।

दुर्लभ तबला बंदिशों का संरक्षण

पंडित ज्ञानप्रकाश घोष द्वारा संरक्षित तबला बंदिशें विभिन्न घरानों की विशिष्ट शैली एवं रीति का दस्तावेज़ स्वरूप थीं। वे रचनाएँ उस समय प्रचलन में नहीं थीं। यहाँ पाँच दुर्लभ तबला बंदिशों का नमूना प्रस्तुत है, प्रत्येक रचना तीनताल या झपताल के कुल 16/10 मात्राओं के अनुसार विभाजित:

1. लखनऊ घराने का कायदा

(बिलम्बित तीनताल - 16 मात्रा)

Published by: Amitrakshar Publishers – Amitrakshar International Journal of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
https://www.amitrakshar.co.in/journal/ : editor@amitrakshar.co.in DOI (Crossref) Prefix: 10.63431

| 1 2 3 4 |
| धा | तित-ति | क | ना |
×
| 5 6 7 8 |
| धे-ना | धे-ना | क | तित |
2
| 9 10 11 12 |
| क | धा-ति | क | तित |
0
| 13 14 15 16 | 1
| क | धे-ना | धे-ना | क | धा |
3

2. दिल्ली घराने का रे ला
(मध्यलय तीनताल - 16 मात्रा)
| 1 2 3 4 |
| धा | तिरकीट | धा | तिरकीट |
×
| 5 6 7 8 |
| धा | क | थुना | क |
2
| 9 10 11 12 |
| धिन | तिरकीट | धिन | तिरकीट |
0
| 13 14 15 16 | 1
| धिन | क | थुना | क | धा
| 3 | ×

3. फ़र्रुख़ाबाद घराने की बंदिश
(तीनताल - 16 मात्रा)
| 1 2 3 4 |
| त्रिकुट | धा | तित | क |
×
| 5 6 7 8 |
| तिरकीट | धा | धिन | ना |
2
| 9 10 11 12 |
| धिन | धा | तित | धा |

Published by: Amitrakshar Publishers – Amitrakshar International Journal of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
https://www.amitrakshar.co.in/journal/ : editor@amitrakshar.co.in DOI (Crossref) Prefix: 10.63431

0
| 13 14 15 16 | 1
| गे | तिरकीट | धा। | धा |
| 3 | ×

4. पखावज प्रेरित रचना
(झपताल - 10 मात्रा)
1 2	3 4 5
धा	धि	धा	त्रकीट	धुम
×	2
6 7	8 9 10	1
किट धा	धा क तिरकीट	धा
0	3	×

5. पंडित ज्ञानप्रकाश घोष की रचना
(तीनताल - 16 मात्रा)
| 1 2 3 4 |
| धिन-तिन|-तिन | धा | तिरकीट |
×
| 5 6 7 8 |
| धा | क | ते-टे | क |
2
| 9 10 11 12 |
| ते-टे | धिन | ना | धिन |
0
| 13 14 15 16 | 1
| ना | क | धा-गे | तिरकीट | धा
3 | ×

उपयोग टिप्स:

1. विद्यार्थी प्रत्येक भाग को जहां खड़ा हो चुका है, उसे स्पष्ट रूप से चिन्हित करके अभ्यास करें।
2. धीरे-धीरे ताल गिनकर उच्चारण करें, फिर धीरे-धीरे गति बढ़ाएं।
3. प्रत्येक भाग में हाथों की चाल और वज़न का संतुलन बनाए रखें।

आकाशवाणी में योगदान

उस समय के संगीत-प्रिय रेडियो मंत्री माननीय बी. वी. केशरकर के अनुरोध पर उन्होंने आकाशवाणी कोलकाता के संगीत विभाग में योगदान दिया। आकाशवाणी के संगीत विभाग में उनकी दीर्घकालीन सक्रिय सहभागिता ने इसे एक समृद्ध एवं विविधतापूर्ण स्वरूप प्रदान किया। लघु संगीत के निर्माता के रूप में ज्ञानबाबू का निर्देशन और परामर्श कार्यक्रमों को अत्यंत आकर्षक बनाता था। इस आकाशवाणी में प्रथम बार 'बाणिसंघ' द्वारा जो एकता-ताल वादन

Published by: Amitrakshar Publishers – Amitrakshar International Journal of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
https://www.amitrakshar.co.in/journal/ : editor@amitrakshar.co.in DOI (Crossref) Prefix: 10.63431

हुआ, उसमें ज्ञानबाबू ने बेहाला वादक के रूप में भाग लिया। कड़ी मेहनत एवं प्रतिभा के बलबूते उन्होंने अपने लिए सर्वभारतीय प्रथम श्रेणी के कलाकारों की पंक्ति में विशिष्ट स्थान बना लिया।

विदेश भ्रमण

1954 ईस्वी में भारतीय सांस्कृतिक दल के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने रूस, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, जिनेवा आदि देशों की यात्रा की। आकाशवाणी से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् वे अमेरिकी पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय में भारतीय संगीत के प्रोफेसर के रूप में सम्मिलित हुए।

संगीत निर्देशन

वे उच्च स्तरीय गीतकार एवं संगीतकार थे। आकाशवाणी एवं संगीत सम्मेलनों के अतिरिक्त, पंडित ज्ञानप्रकाश घोष ने चलचित्र संगीत में भी अद्‌वितीय प्रतिभा दिखाई।

उन्होंने 'बसंतबहार', 'यदुभट्ट', 'आशा', 'आँधारे आलो', 'राजलक्ष्मी', 'श्रीकांत', 'अरक्षणीया' जैसी अनेक फिल्मों में सफलतापूर्वक संगीत निर्देशन किया।

इसके अलावा हिंदी फिल्मों 'न्याय', 'मुजरिम' आदि में भी उन्होंने उत्कृष्ट संगीत संयोजन किया।

वादन शैली

ज्ञानबाबू की वादन शैली पूरी तरह से फ़र्रुख़ाबाद घराने से प्रभावित थी। फिर भी विभिन्न उस्तादों से तालिम लेने तथा सहज प्रतिभा के कारण वे लगभग प्रत्येक घराने की वादन-शैली से परिचित थे। इस प्रकार उनकी वादन में नवीनता के साथ फ़र्रुख़ाबाद की मिठास का अनूठा मिश्रण दिखाई देता था। वे 'गाब', 'कानी' और बाँया की कारीगरी में पारंगत थे, जिससे उनके ताल में एक अद्भुत लयबद्धता उत्पन्न होती थी।

शिष्यवर्ग

1968 ईस्वी में ज्ञानबाबू ने 'सौरभ एकेडमी ऑफ म्यूज़िक' नामक एक संगीत संस्थान की स्थापना की। शिक्षक के रूप में उन्होंने अतुलनीय योग्यता प्रदर्शित की। अपने संगीत जीवन में उन्होंने न केवल अनगिनत छात्रों को बनाया, बल्कि उन्हें सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनके शिष्य वर्ग में कंठगायन में–प्रसून बनर्जी, अजय चक्रवर्ती, अरुण भदुरी, कल्याणी घोष (पत्नी), तनीमा ठाकुर, बाणी कोनार, रेबा घोष, शीला मुखोपाध्याय, पूर्णिमा ठाकुर, उमा दे आदि नाम उल्लेखनीय हैं। तबला वादन में–अनिंद्य चटर्जी, निखिल घोष, श्यामल बसु, मानस दासगुप्ता, गोविंद बसु, शंकर घोष, संजय मुखर्जी, कानाई दत्त, मणिक पाल, उनके पुत्र मल्लार घोष प्रमुख शिष्य थे। संक्षेप में कहें तो तबला वादक के रूप में ज्ञानबाबू की अद्‌वितीय प्रतिष्ठा उनकी प्रतिभा के चलते और भी पुष्ट हुई।

सम्मानों की सूची

पंडित ज्ञानप्रकाश घोष को अनेक सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें उल्लेखनीय हैं:

1975 ईस्वी में संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें फैलोशिप प्रदान की।

1984 ईस्वी में पश्चिम बंगाल सरकार द्‌वारा 'अलाउद्दीन पुरस्कार' से सम्मानित।

1984 ईस्वी में भारत सरकार द्‌वारा 'पद्मभूषण' एवं बंबई संगीत संसद फैलोशिप से विभूषित।

1988 ईस्वी में विश्वभारती ने 'देशिकोत्तम' की उपाधि से सम्मानित किया।

1992 ईस्वी में रवीन्द्र भारती एवं बर्धमान विश्वविद्‌यालय ने उन्हें मानद 'डी.लिट' उपाधि प्रदान की।

1978 में रामचरितमानस के संगीत रूपांतरण के लिए एशियन रामायण सम्मेलन (कानपुर) ने उन्हें सर्वोच्च सम्मान से अलंकृत किया।

ग्रंथ रचना

ज्ञानप्रकाश घोष ने केवल शिक्षा प्राप्त एवं दी ही नहीं, बल्कि स्वयं भी अनेक बंगाली एवं हिंदी रचनाएँ लिखीं। उनमें से एक प्रसिद्ध रचना 'चतुरंग' थी, जिसमें तबला, पखावज, कठक एवं तराना का प्रयोग किया गया।

उनके द्वारा रचित महत्वपूर्ण ग्रंथ:

1. "तहजीब-ए-मौसिकी" - संगीत का सिद्धांत, इतिहास एवं व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित।
2. "एलेम नए देशे" - 1954 में रूस यात्रा के अनुभव पर आधारित यात्रा-कथा।
3. "ताल प्रसंग" - ताल के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा।
4. "संगीत चिंतन" - संगीत पर उनके विचार एवं विश्लेषण।
5. "भाव, रस एवं अनुभूति" - संगीत में भाव, रस एवं अनुभूति का विश्लेषण।
6. "ताल-रूप-ताल-रूपकथा" - ताल के विभिन्न रूपों एवं उनकी कथाएँ।
7. "Foundations of Tabla" - तबले के मूलभूत विषय पर अंग्रेजी में रचित।
8. "Rhythmical Arts of Tabla" - तबले के छंद एवं कला पर अंग्रेजी में रचित।

एक प्रसंगत सूचना के अनुसार, 'जागो बंगला' पत्रिका में प्रकाशित एवं यूट्यूब वीडियो के एक साक्षात्कार में पंडित मल्लार घोष बताते हैं -

"मेरे पिता संगीत गुरु ज्ञानप्रकाश घोष की पुस्तक 'एलेम नए देशे' मेरा प्रिय ग्रंथ है। 1954 में रूस भ्रमण के पश्चात इस पुस्तक को उन्होंने लिखा था, और समय मिलने पर मैं इसे पढ़ता रहता हूँ।"

निधन

उपमहाद्वीप के असाधारण प्रतिभा पंडित ज्ञानप्रकाश घोष 18 फ़रवरी 1997 को हमें छोड़कर स्वर्ग सिधार गए।

उपसंहार

संगीत के परम पूजारी पंडित ज्ञानप्रकाश घोष ने संपूर्ण जीवन निरंतर साधना के द्वारा संगीतविद्या पर अधिकार प्राप्त किया, और इसे मुक्तहस्ते समर्पित किया। उनके अधिकांश शिष्य भारत की सीमाएँ पार करके विश्व पटल पर उनके गौरवशाली नाम को प्रस्थापित कर रहे हैं।

Published by: Amitrakshar Publishers – Amitrakshar International Journal of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
https://www.amitrakshar.co.in/journal/ : editor@amitrakshar.co.in DOI (Crossref) Prefix: 10.63431